

प्रेस विज्ञप्ति

एनपीसीआईएल के न्यूक्लियर विद्युत केंद्रों में से एक कैगा विद्युत उत्पादन केंद्र प्रत्येक 220 मेगावाट क्षमता वाले दाबित भारी पानी रिएक्टरों की चार इकाइयों वाला एक न्यूक्लियर विद्युत केंद्र है। इसकी पहली तीनों इकाइयां प्रचालनरत हैं व दक्षिणी ग्रिड को बिजली की आपूर्ति कर रही हैं और चौथी इकाई कमीशनिंग के अंतिम चरण में है।

देखा गया है कि न्यूक्लियर विद्युत केंद्रों से निकलने वाले न्यूक्लियर विकिरण से स्वास्थ्य व पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों से संबंधित विषयों को कभी-कभी उठाया जाता रहा है। न्यूक्लियर विद्युत केंद्रों के अभिकल्प में बहुस्तरीय अवरोधों व बचाव के साधनों को लागू किया जाता है ताकि दुर्घटनावश किसी प्रकार के न्यूक्लियर विकिरण रिसाव की संभावना को शून्य किया जा सके। एनपीसीआईएल की सभी इकाइयां अपने प्रचालन में परमाणु ऊर्जा नियामक परिषद के सख्त विनिर्देशों के अधीन कार्य करते हुए गुणवत्ता व संरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान करती हैं और विभिन्न सांविधिक निकायों जैसे पर्यावरण एवं वन मंत्रालय तथा वन प्रदूषण नियंत्रण बोर्डों आदि के सभी दिशा-निर्देशों का अनुपालन करती हैं। कैगा विद्युत उत्पादन केंद्र को आईएसओ-14001 (पर्यावरणीय मानक) तथा आईएसओ-18001(व्यावसायिक स्वास्थ्य मानक) के अंतर्गत प्रमाणन प्रदान किया गया है।

कैगा विद्युत-उत्पादन केंद्र की स्थापना से पहले परमाणु ऊर्जा विभाग ने वर्ष 1977 में मल्लापुर में भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र के अधीन एक स्वतंत्र पर्यावरण सर्वेक्षण प्रयोगशाला की स्थापना की थी। इस प्रयोगशाला ने कैगा व इसके आस-पास की रेडियोधर्मी स्थितियों के आधारभूत आंकड़े स्थापित किए थे। यह स्वतंत्र निकाय भूमि, जल, वायु, दूध, मछली, घास, अनाज, अंडों, मांस, भोजन, पत्तियों, सब्जियों, फलों, बकरी थाइरॉइड आदि के नमूने एकत्र करता है और उनमें रेडियोधर्मी तत्वों की उपस्थिति का पता लगाने के लिए उनका विश्लेषण करता है। कैगा विद्युत उत्पादन केंद्र को केंद्र मानते हुए इसकी 30 किमी की त्रिज्या में आने वाले आस-पास के लगभग 30 गावों जैसे हर्तुगा, बलेमाने, कलाशे, मल्लापुर, वज्राली, कोडासल्ली आदि गावों से प्रतिवर्ष लगभग 1300 से 1500 विशिष्ट प्रकार के नमूने एकत्र किए जाते हैं। इस प्रयोगशाला का उद्देश्य न्यूक्लियर विद्युत केंद्र की स्थापना से पहले एकत्र किए गए आधारभूत आंकड़ों के साथ संयंत्र प्रचालन के दौरान एकत्र किए गए आंकड़ों की तुलना करना है। इन नमूनों के परिणामों में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं पाया गया है जिससे स्पष्ट है कि कैगा विद्युत उत्पादन केंद्र के प्रचालन से पर्यावरण पर किसी भी प्रकार का कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।

जारी.....2/-

भारतीय मत्स्यपालन संस्थान के सहयोग से कैगा विद्युत उत्पादन केंद्र संयंत्र स्थल के निकट एक मछली पालन केंद्र की स्थापना की गई है और इन मछलियों में किसी प्रकार की रेडियोधर्मिता के लक्षण नहीं पाए गए हैं।

कैगा के आस-पास के 30 किमी के क्षेत्र में किसी बाहरी विकिरण की उपस्थिति हेतु का पता लगाने के लिए पर्यावरण सर्वेक्षण प्रयोगशाला द्वारा रेडियोधर्मी सर्वेक्षण भी किए जा रहे हैं। न्यूक्लियर विद्युत संयंत्रों के प्रचालन से पहले एकत्र किए गए आधारभूत आंकड़ों के विकिरण स्तर में किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं मिला है।

न्यूक्लियर विद्युत संयंत्रों के आस-पास निवास करने वाली जनता के स्वास्थ्य की रक्षा हेतु एनपीसीआईएल ने अपने विद्युत संयंत्रों के आस-पास की आबादी का स्वतंत्र विशेषज्ञ निकायों द्वारा जानपदिक-रोग विज्ञानी सर्वेक्षण कराए जाने की नीति अपनाई हुई है। वर्ष 1997 से 1998 की अवधि के दौरान कस्तूरबा मेडिकल कॉलेज (केएमसी) द्वारा कैगा के आस-पास के चार तालुकों, कारवार, अंकोला, येल्लापुर व सुपा के 85 गावों में यह सर्वेक्षण कराया गया था।

एनपीसीआईएल ने इसी प्रकार के अध्ययन अपने अन्य विद्युत संयंत्र स्थलों में भी करवाए हैं जिन्होंने 15 वर्ष से भी अधिक समय से प्रचालन काल पूरा कर लिया है। विभिन्न स्वतंत्र विशेषज्ञ निकायों द्वारा किए जाने वाले इन अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि कैसर से होने वाली मृत्यु की दर में अन्य क्षेत्रों में निवास करने वाली आम जनता के मुकाबले कोई भिन्नता नहीं है।

अपने देश की उन्नति व विकास के लिए प्रदूषण मुक्त व स्वच्छ विद्युत उपलब्ध कराने के लिए एनपीसीआईएल प्रतिबद्ध है। विद्युत संयंत्रों का अभिकल्प अपने संयंत्रों के निकटवर्ती पर्यावरण व आबादी की संरक्षा को उच्चतम प्राथमिकता व सतत विद्युत उत्पादन को ध्यान में रखते हुए तैयार किया जाता है।

हस्ता.....

(आर.आर.थोराट)

अपर महाप्रबंधक (मा.सं.)